अध्याय–3

लोकतंत्र में सत्ता प्राप्ति के लिए प्रतिस्पर्द्धा और संघर्ष

प्रतिस्पर्द्धा एवं संघर्ष

प्रतिस्पर्द्धा
(सत्ता में हिस्सेदारी की इच्छा रखने वालों में सत्ता प्राप्त करने के प्रयास।)

प्रतिस्पर्द्धा कैसे होती है?

(शासन या सरकार किस प्रकार चले एवं शासन में लोगों की भागीदारी कैसे हो, इस विषय में एक जैसी सोच एवं विचारधारा रखने वाले समूह को राजनीतिक दल कहते हैं। ये राजनीति दल अपनी सोच एवं विचारधारा को उत्तम बताने के क्रम में सत्ता को प्राप्त करने का प्रयास करते हैं।

राजनीतिक दल कौन–कौन से कार्य करते हैं?

- नीति एवं कार्यक्रम बनाने का कार्य करते हैं।
- चुनाव में बहुमत प्राप्त करके शासन करते हैं।
- राजनीतिक दल अपने कार्यक्रमों को चुनाव घोषणा पत्र बनाकर जनता के बीच जाते हैं और चुनाव में भाग लेते हैं।
- चुनाव में अलग–अलग राजनीतिक दल अपने विचारों से जनता को विकल्प देते हैं और जनमत का निर्माण करते हैं।
- सरकार एवं जनता के बीच कड़ी का काम करते हैं।
- दल की नीतियों एवं कार्यक्रमों को बनाते हैं।
- आपदा के समय अर्थात् भूकम्प एवं बाढ़ के समय जनता के साथ सहयोग करते हैं।

संघर्ष
समूह अथवा संगठन बनाकर मांगों के लिए एकजूट होकर आन्दोलन करना।

बिहार छात्र आन्दोलन

लोकनायक जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में 1975 में हुआ था। 'सम्पूर्ण क्रांति' इसका प्रमुख नारा था। 1977 में केन्द्र में जनता पार्टी की सरकार बनी थी और तत्कालीन कांग्रेस को सरकार की देशव्यापी पराजय मिली थी।

महिलाओं द्वारा चलाये गये आन्दोलन

चिपको आन्दोलन

1970 के दशक में उत्तराखण्ड में महिलाओं द्वारा पेड़ों की रक्षा करने के लिए आन्दोलन किया गया, जिसमें उन्होंने पेड़ों से चिपककर अपने विरोध का प्रदर्शन किया था। इस आन्दोलन का परिणाम हुआ कि 15 वर्षों तक हिमालय क्षेत्र के पेड़ों की कटाई पर रोक लगी।

ताड़ी विरोधी आन्दोलन

आंध्र प्रदेश के नेल्लौर जिले के दुबरगंटा गाँव में ताड़ी की बिक्री के बन्द करने का आन्दोलन महिलाओं द्वारा चलाया गया था। बाद में यह आन्दोलन सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ आन्दोलन बन गया। इसका परिणाम हुआ कि महिलाओं को स्थानीय निकायों में प्रतिनिधित्व देने के लिए संविधान में 73वीं एवं 74वीं संशोधन हुआ।

https://www.evidyarthi.in/

- राजनीतिक दल देश के विकास में रचनात्मक सहयोग देते हैं।

राजनीतिक दल ऊपर लिखे गये कार्यों से लोकतंत्र को मजबूत करते हैं और इसलिए ये लोकतंत्र के प्राण कहे जाते हैं। ऐसा करके ये राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान करते हैं।

राजनीतिक दल किन चुनौतियों का सामना करती है?

- राजनीतिक दलों के भीतर सभी के विचारों को महत्व नहीं देना।
- नेतृत्व को लेकर विवाद का होना।
- राजनीतिक दल में अपने वंशज एवं परिवार के लोगों को अन्य कार्यकर्त्ताओं की उपेक्षा करते हुए आगे बढ़ाया जाना और उन्हें महत्वपूर्ण पदों पर बैठाये जाने की चेष्टा।
- पैसेवालों एवं आपराधिक छवि के लोगों का अत्यधिक महत्व
- दल एवं सिद्धान्तों को छोड़कर सत्ता प्राप्ति के लिए गठबंधन किया जाना।

सूचना के अधिकार का आन्दोलन

1990 में राजस्थान के एक छोटे गाँव भीम तहसील से इस आन्दोलन की शुरूआत हुई। ग्रामीण बिल भुगतान की सूचना माँग रहे थे। सरकार ने इसकी सुनवाई की और कानून में परिवर्त्तन किया। यह आन्दोलन देशव्यापी हो गया जो 2005 में संसद द्वारा सूचना का अधिकार अधिनियम बना।

नर्मदा बचाओ आन्दोलन

नर्मदा आन्दोलन का मुख्य उद्धेश्य था कि बांध बनने से गाँवों को डूब जाने के खतरों से बचाना और उनके पुनर्वास की व्यवस्था करना।

किसान आन्दोलन

महाराष्ट्र के शेतकारी आन्दोलन एवं किसान यूनियन ने अपनी मांगों के लिए आन्दोलन किये।

राजनीतिक दल कैसे प्रभावकारी हो सकते हैं?

- दल–बदल पर अंकुश लगाया जाना तथा इसके लिए बने कानून को सख्ती से लागू किया जाना चाहिए।
- दल–बदल : जब कोई निर्वाचित सदस्य अपनी इच्छा से दल को छोड़कर दूसरे दल में चला जाता है।
- अथवा– विधायिका में दल के निर्देषों के खिलाफ मत देता है या मतदान का बहिष्कार करता है और पन्द्रह दिनों के अन्दर इसके लिए दल से माफी नहीं मांगता है। तब दल विरोधी कानून के तहत इसकी सदस्यता समाप्त हो जाती है।
- दलों के भीतर आपसी सहमति के साथ सभी को अपने विचारों को रखने की स्वतंत्रता होनी चाहिए।
- गंभीर मसलों पर देश हित में सोचना एवं सुझाव देना चाहिए।

दलीय व्यवस्था के तीन रूप

एकदलीय व्यवस्था : चीन में एक ही दल है।

द्विदलीय व्यवस्था : अमेरिका एवं इंगलैंड में दो दल हैं।

बहुदलीय व्यवस्था : भारत में बहुदलीय व्यवस्था है। गठबंधन की सरकार इसका उदाहरण है।

https://www.evidyarthi.in/

भारतवर्ष में राजनीतिक दलः राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय

राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त दल

लोक सभा चुनाव में तीन राज्यों में कम से कम 2% मत या विधान सभा के आम चुनाव में चार राज्यों में 6% मत प्राप्त करने वाले और 4 लोकसभा सीट प्राप्त करने वाले दल राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त दल होते हैं।

भारत में मान्यता प्राप्त राष्ट्रीय दल एवं चुनाव चिन्ह

दल का नाम	चुनाव चिन्ह
भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस	पंजा
भारतीय जनता पार्टी	कमल
भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (सी0पी0आई0)	हंसिया–बाली
सी0 पी0 आई0 (एम)	हंसिया–हथौड़ा–तारा
राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एन0 सी0 पी0)	घड़ी
बसपा (बहुजन समाज पार्टी)	हाथी

राज्य स्तरीय दल

लोक सभा/विधान सभा चुनाव में वैध मतों का कम से कम 6% के साथ विधान सभा की कम से कम 3% सीट जीतना आवश्यक है।

राज्यस्तरीय दल एवं चुनाव चिन्ह

दल का नाम	राज्य	चुनाव चिन्ह
जनता दल (यू0)	बिहार, झारखण्ड	तीर
राष्ट्रीय जनता दल (राजद)	बिहार, झारखण्ड	लालटेन
लोक जनशक्ति पार्टी	बिहार, झारखण्ड	बंगला
भाकपा –(भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी) मार्क्सवादी, लेनिनवादी	बिहार झारखण्ड, प0 बंगाल, केरल	सीढ़ी
समाजवादी पार्टी	उत्तर प्रदेश, बिहार	साईकिल

नोट : राजनीतिक दलों के चुनाव चिन्ह का निर्धारण भारत निर्वाचन आयोग करता है।

बिहार बोर्ड द्वारा पूछे गए प्रश्न :

1. राजनीतिक दल क्या है?
2. राजनीतिक दल को प्रभावशाली बनाने के उपाय कौन–कौन से हैं?
3. राजनीतिक दल का राष्ट्र विकास में क्या योगदान है?
4. राजनीतिक दल लोकतंत्र का प्राण है। कैसे?
5. राजनीतिक दलों के कार्य का वर्णन करें।
6. राजनीतिक दल की प्रमुख चुनौतियाँ क्या हैं?
7. परिवारवाद क्या है?
8. विभिन्न आन्दोलन :
   (1) सूचना का अधिकार आन्दोलन
   (2) चिपको आन्दोलन
   (3) राष्ट्र की प्रगति में महिला आन्दोलनों का योगदान।

◆◆◆

https://www.evidyarthi.in/